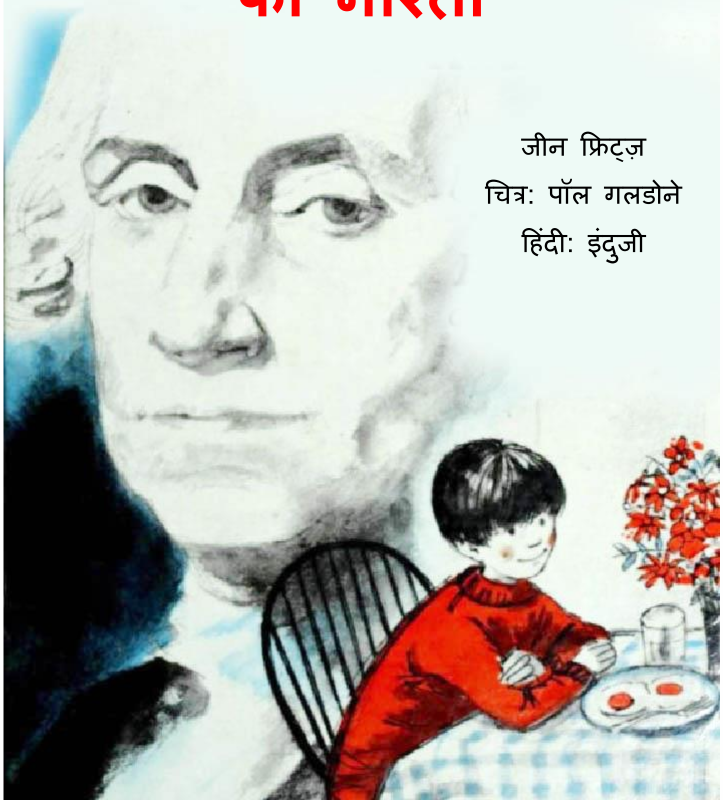
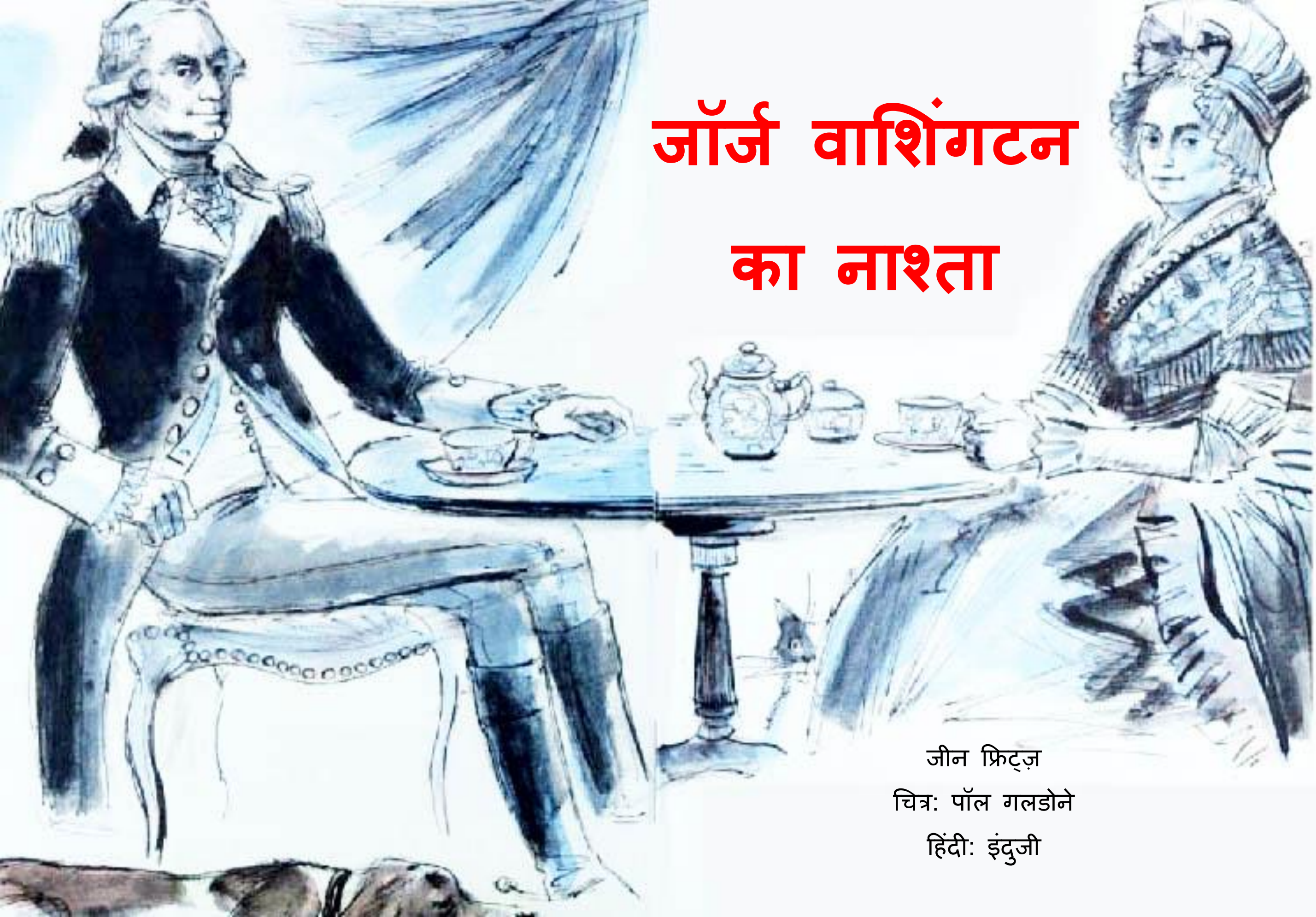
जॉर्ज वाशिंगटन का नाश्ता



जीन फ्रिट्ज़
चित्र: पॉल गलडोने
हिंदी: इंदुजी



जॉर्ज वाशिंगटन का नाश्ता

जीन फ्रिट्ज़

चित्र: पॉल गलडोने

हिंदी: इंदुजी

जॉर्ज वाशिंगटन का नाश्ता







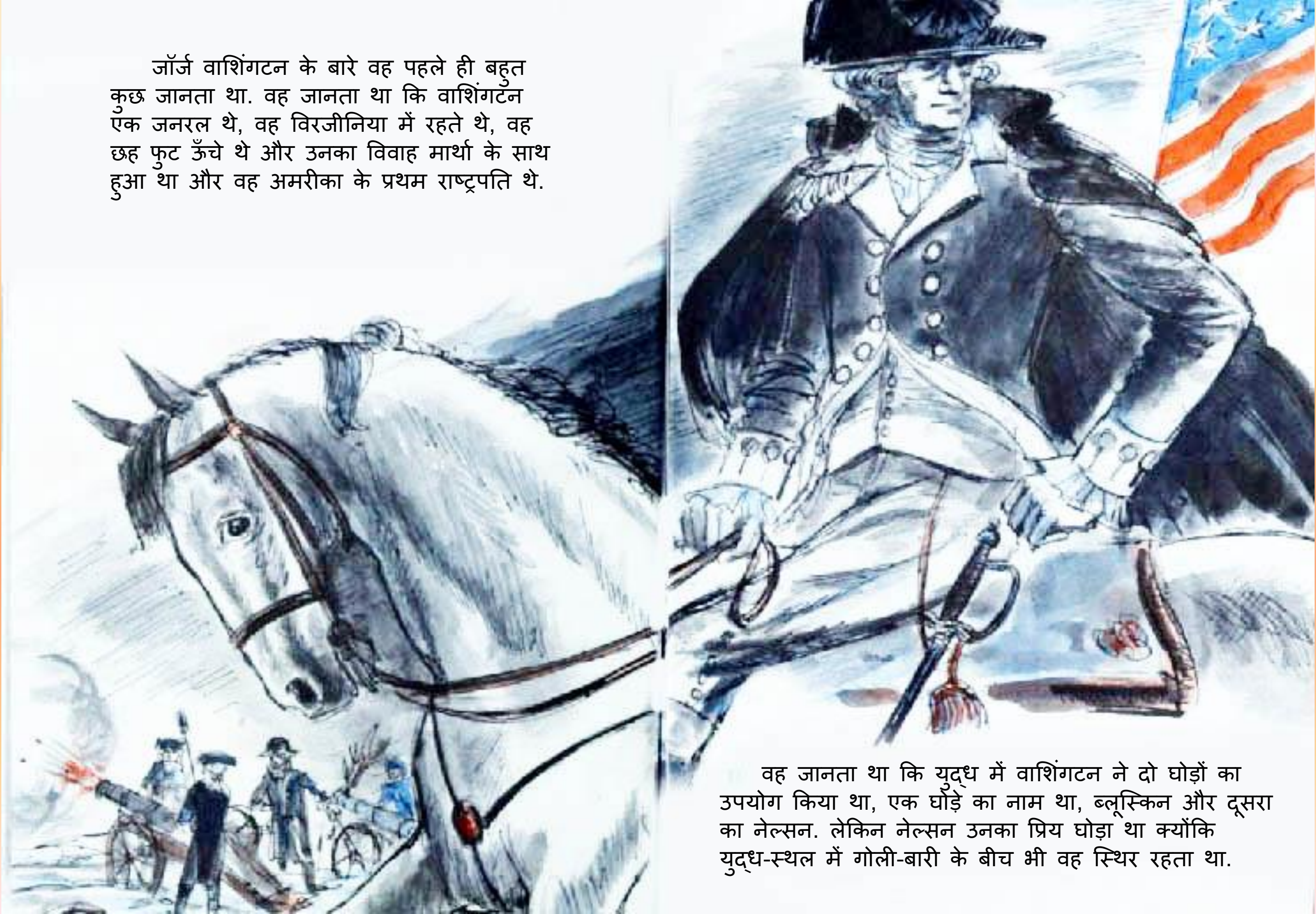
जॉर्ज डब्लू ऐल्न को दो बातों पर बहुत अभिमान था. एक बात थी उसका नाम और दूसरी बात थी उसका जन्मदिन.

उसका का नाम जॉर्ज वाशिंगटन के नाम पर रखा गया था. उसका जन्म उनके जन्मदिन को हुआ था, अर्थात 22 फरवरी के दिन.

उसे लगता था कि जॉर्ज वाशिंगटन के साथ उसका कुछ संबंध था, ऐसा वह कहा करता था.

इसी कारण जॉर्ज वाशिंगटन के बारे में हर प्रकार की जानकारी पाने के लिए वह उत्सुक रहता था.

जॉर्ज वाशिंगटन के बारे वह पहले ही बहुत कुछ जानता था. वह जानता था कि वाशिंगटन एक जनरल थे, वह विरजीनिया में रहते थे, वह छह फुट ऊँचे थे और उनका विवाह मार्था के साथ हुआ था और वह अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति थे.



वह जानता था कि युद्ध में वाशिंगटन ने दो घोड़ों का उपयोग किया था, एक घोड़े का नाम था, ब्लूस्किन और दूसरा का नेल्सन. लेकिन नेल्सन उनका प्रिय घोड़ा था क्योंकि युद्ध-स्थल में गोली-बारी के बीच भी वह स्थिर रहता था.

वह यह भी जानता था कि वाशिंगटन के पास दस शिकारी कुत्ते थे. उनके नाम थे, टिप्सी, पॉम्पी, हैरी, मेडन, लेडी, डचैस, डरंकर्ड, ट्रू-लव, मोप्सी और पायलट.





फिर एक दिन नाश्ता करते समय जॉर्ज ऐल्न ने सोचा कि वाशिंगटन के बारे में एक ऐसी बात थी जो वह नहीं जानता था. ज़ार्ज के माता-पिता अपने काम पर जा चुके थे और उसकी दादी किचेन में अंडे पका रही थी.

"दादी," जॉर्ज ने पूछा, "जॉर्ज वाशिंगटन नाश्ते में क्या खाते थे?"

"मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है," दादी ने कहा. "यह तो मेरे समय से पहले की बात है." दादी ने जार्ज के सामने एक प्लेट में अंडा रखते हुए कहा. "और यह आशा मत करना कि यह पता लगाने में मैं तुम्हारी कोई सहायता करूंगी."

जॉर्ज की दादी जानती थी कि जॉर्ज का स्वभाव कैसा था. जॉर्ज जब भी कोई बात जानना चाहता था तो वह तब तक कोशिश करता रहता था जब तक वह जानकारी खोज नहीं लेता था. वह दूसरों को भी परेशान करता रहता था. वह वही करता था जो उसके दादा किया करते थे - सवाल पूछता था, किताबें इकट्ठी करता था और उत्तर पाने के लिए हर एक को तंग करता था. जॉर्ज की दादी उन नाश्तों के बारे में अपना सिर खपाने वाली न थी जो दो सौ साल पहले खाये गए थे. इसके अतिरिक्त घर में सफाई भी करनी थी.

जॉर्ज ने अंडे को काटते हुए पूछा, "अगर मैं स्वयं यह पता लगा लूँ तो क्या आप मेरा एक काम करेंगी?"

"क्या?"

"क्या आप मेरे लिए जॉर्ज वाशिंगटन का नाश्ता बनायेंगी?"

जॉर्ज की दादी ने किचेन में लगी घड़ी को देखा. "जॉर्ज," दादी ने कहा, "तुम स्कूल देर से पहुँचोगे."

"लेकिन क्या आप मेरा कहा मानेंगी," जॉर्ज ने कहा, "क्या आप मेरे लिए जॉर्ज वाशिंगटन का नाश्ता बनायेंगी?"

जॉर्ज की दादी अभी भी घड़ी की ओर देख रही थीं, "मैं कुछ भी बना दूँगी," दादी ने कहा, "अगर तुम झटपट स्कूल की ओर चल दोगे तो."

उस दिन स्कूल के बंद होने पर जॉर्ज लाइब्रेरी आ गया. मिस विलिंग, लाइब्रेरियन, उसे आता देख कर मुस्करायीं. “ज़ॉर्ज ऐल्न आज क्या जानना चाहता है,” उन्होंने सोचा.

जॉर्ज डेस्क के पास आया. “मिस विलिंग, क्या आप जानती हैं कि जॉर्ज वाशिंगटन नाश्ते में क्या खाते थे?”

मिस विलिंग को तो यह भी ठीक से याद न था कि उस दिन सुबह उन्होंने स्वयं नाश्ते में क्या खाया था. लेकिन जॉर्ज की भांति उन्हें भी प्रश्नों के उत्तर खोजना अच्छा लगता था.

जॉर्ज और मिस विलिंग एक साथ वहाँ आए जहाँ एनसाइक्लोपिडिया रखा था और उस में डब्लू के नीचे वाशिंगटन, जॉर्ज को ढूँढा. एनसाइक्लोपिडिया में लिखा था कि वाशिंगटन का जन्म 1732 में हुआ था, 1759 में उनका विवाह हुआ था और 1789 में वह राष्ट्रपति चुने गए थे और 1799 में उनका निधन हुआ था. अपने जीवनकाल में जो यात्रायें उन्होंने की थीं और जो युद्ध लड़े थे उन सब का विवर्ण उसमें लिखा था. पर उनकी दिनचर्या के बारे में कोई जानकारी न थी. एनसाइक्लोपिडिया में उनके नाश्ते के विषय में भी कुछ न लिखा था.





मिस विलिंग जॉर्ज को किताबों की नामावली का पास ले आई. हर किताब के बारे में एक कार्ड पर उसका विवर्ण लिखा था और यह भी लिखा था कि लाइब्रेरी में वह किताब कहाँ पर थी. जॉर्ज को छोटे-छोटे दराजों में कार्डों को ढूँढना अच्छा लगता था. लाइब्रेरी में जॉर्ज वाशिंगटन के बारे में सात किताबें थीं. अधिकांश किताबें उस भाग में थीं जहाँ जीवनियाँ रखी थीं.

जॉर्ज ने चार किताबें अपने साथ घर ले जाने के लिए चुन लीं. मिस विलिंग ने आश्वासन दिया कि बाकी किताबें वह स्वयं देखेंगी.



उस रात खाना खाने के बाद जॉर्ज ने एक किताब अपने पिता को पढ़ने के लिए दी. और दूसरी अपनी माँ को.

“मेरी ओर मत देखो,” उसकी दादी ने कहा. “मैंने कहा था कि मैं नाश्ता बना दूँगी पर मैं किताब नहीं पढ़ूँगी.”

इसलिए जॉर्ज ने दो किताबें अपने पास रख लीं. सारी रात जॉर्ज और उसके माता-पिता किताबें पढ़ते रहे.

जॉर्ज यह जान कर उत्साहित हुआ कि वाशिंगटन को चीज़ें गिनना अच्छा लगता था. जॉर्ज को भी गिनना पसंद था. स्कूल घर से कितने कदम दूर था यह जॉर्ज ने गिन रखा था. यह जानकारी पाकर जॉर्ज को लगा कि वाशिंगटन के साथ उसका संबंध गहरा हो गया था. किताब में लिखा था कि वाशिंगटन ने एक बार गणना की थी कि एक पाउंड लाल क्लोवर में 71000 बीज होते हैं जबकि रैड रिवर घास में 844800 बीज थे.

लेकिन वाशिंगटन के नाश्ते के विषय में किताब में कुछ न लिखा था और जॉर्ज ने अनुमान लगाया था कि वाशिंगटन ने 24000 से अधिक बार नाश्ता किया होगा.



तभी अचानक मिसेज़ ऐल्न ने ऊपर देखा, “यह बात सुनो,” उन्होंने कहा, “इस किताब में लिखा है कि जॉर्ज वाशिंगटन के समय में जिन वस्तुओं को सेवन लोग नाश्ते में करते थे वह थीं, टर्की, माँस, तले हुए होमिनि, टोस्ट, हैम, ब्रैड, बटर, चाय, कॉफी और चॉकलेट.



जॉर्ज के मुँह में पानी आने लगा. वह मुस्कराया और उसने दादी की ओर देखा.

“हम्फ!” दादी ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा, “किताब में लिखा है कि विरजिनिया में लोग आम तौर पर यह चीज़ें खाते थे. सब जानते हैं कि जॉर्ज वाशिंगटन एक असाधारण व्यक्ति थे. कौन कह सकता है कि वह क्या खाते थे.”

कुछ देर बाद मिस्टर ऐल्न ने किताब से आँखें हटाईं और सामने देखा. “अनुमान लगा सकते हो क्या लिखा है,” उन्होंने कहा. “लिखा है कि वाशिंगटन के समय में लोग नाश्ता नहीं करते थे. दस बजे लोग नाश्ते के बजाय लंच करते थे.”

जॉर्ज की दादी हँसीं और उन्होंने जॉर्ज की ओर देखा.

“इस बात का कोई अर्थ नहीं है,” जॉर्ज बोला. “किताब में वाशिंगटन के समय के बारे में लिखा है. जॉर्ज वाशिंगटन के बारे में नहीं.”



जिस दिन ऐल्न परिवार ने चारों किताबें पढ़ लीं वह शनिवार था, वसंत ऋतु का एक उजला, अच्छा दिन. जॉर्ज की दादी ने धोने के लिए सारे परदे उतार लिए. उसकी माँ ने गर्म कपड़े बाहर धूप में बिखेर दिए.

जॉर्ज लाइब्रेरी गया. मिस विलिंग ने सुझाव दिया कि यह पता लगाना चाहिए कि वाशिंगटन के मित्रों ने क्या लिखा था.

उन्होंने सबसे पहले जॉन ऐडम्स की डायरी पढ़ी, जो अमरीका के दूसरे राष्ट्रपति थे. जॉन ऐडम्स ने लिखा था कि वाशिंगटन ने लड़कपन में मुँह से अखरोट तोड़-तोड़कर अपने दाँत खराब कर लिए थे.

थामस जैफ्रसन, जो तीसरे राष्ट्रपति थे, ने लिखा था कि वाशिंगटन अपने समय के सबसे अच्छे घुड़सवार थे.



जनरल लफायट, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में वाशिंगटन की सहायता की थी लिखा था कि वाशिंगटन 13 नंबर का जूता पहनते थे. ऐसा कहा जाता था कि वाशिंगटन अपने हाथों से घोड़े की नाल मोड़ सकते थे.

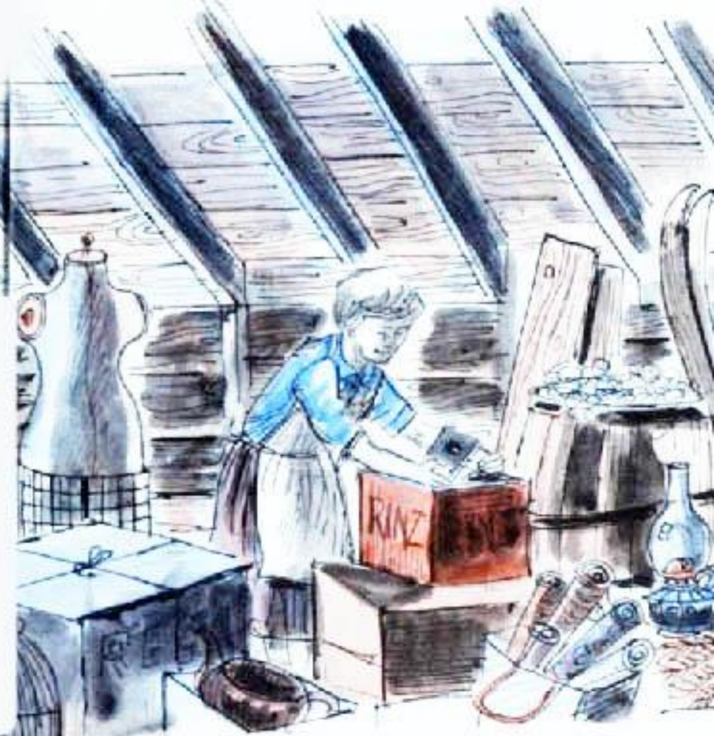


लेकिन किसी ने यह न लिखा था कि वशिंगटन कुछ खाते भी थे या नहीं.

दिन-प्रतिदिन जॉर्ज और उसकी माँ और पिता और मिस विलिंग किताबें पढ़ते रहे. जॉर्ज की दादी ने घर की सफाई शुरु कर दी.

फिर एक दिन मिस विलिंग ने कहा कि उन्होंने सब किताबें पढ़ ली थीं. लाइब्रेरी में जॉर्ज वाशिंगटन के संबंध में कोई और किताब नहीं थी. निस्संदेह, आसपास बड़ी लाइब्रेरियाँ थीं, उन्होंने कहा. जॉर्ज वहाँ जा सकता था.

लेकिन जॉर्ज के मन में कुछ और ही चल रहा था. “हम माउंट वर्नाँन, विरजिनिया में स्थित जॉर्ज वाशिंगटन के घर जायेंगे,” उसने कहा. “जहाँ वाशिंगटन का नाश्ता बनाया जाता था.”





अगले सप्ताहांत जॉर्ज अपने माता-पिता के साथ कार में बैठ गया. उन्होंने जॉर्ज की दादी का भी साथ चलने के लिए कहा पर दादी ने मना कर दिया. उसने कहा कि वह नाश्ता बनायेगी पर उसकी खोज नहीं करेगी. वह घर में अकेले घर की सफाई करेगी. जिन चीज़ों को वह फेंकना चाहती बिना किसी के रोक-टोक फेंक पायेगी.

रास्ते में जॉर्ज और उसके माता-पिता वाशिंगटन डीसी में रुके. जॉर्ज स्मिथसोनियन इंस्टिट्युशन, जो कि एक विशाल म्यूज़ियम था, देखना चाहता था. वहाँ कई ऐतिहासिक वस्तुयें-लट्ठों के बने केबिन, बंद गाड़ियाँ. पुरानी बंदूकें, पुराने सिक्के, पुराने चाकू, पुरानी घड़ियाँ, इत्यादि-प्रदर्शन के लिए रखी हुई थीं.

"तुम्हें जॉर्ज वाशिंगटन का नाश्ता यहाँ नहीं मिलेगा," उसके पिता ने कहा. "वह अपना नाश्ता खा जाते थे, प्रदर्शन के लिए उसे म्यूज़ियम में नहीं रख देते थे."

जॉर्ज ने कहा कि यह बताना थोड़ा कठिन होगा कि इतने बड़े म्यूज़ियम में क्या-क्या देखने को मिल सकता था.

वह जानता था कि जॉर्ज वाशिंगटन से भेंट करने की कोई संभावना नहीं थी और उन्हें एक पर्दा पहने हुए देखने का उम्मीद तो बिलकुल न थी. जॉर्ज के पिता ने बताया कि जॉर्ज वाशिंगटन ने एक रोमन वस्त्र टोगा पहन रखा था. ऐसा नहीं है कि वाशिंगटन ने कभी रोमन टोगा पहना था. लेकिन ज़िस मूर्तिकार ने मूर्ति बनाई थी उसे लगा था कि वाशिंगटन उस पोशाक में अच्छे दिखाई देंगे. जॉर्ज सोचने लगा कि क्या टोगा पहन कर वाशिंगटन लज्जित हो रहे थे. फिर उसे लगा कि ऐसा नहीं था. वाशिंगटन शांत और संतुष्ट लग रहे थे. वास्तव में ऐसा लग रहा था कि जैसे उन्होंने अभी-अभी एक अच्छा नाश्ता किया था. लेकिन वह नाश्ता क्या था, यह पता लगाने का कोई उपाय न था. म्यूज़ियम में जॉर्ज वाशिंगटन के नाश्ते के बारे में कोई जानकारी न थी.



लेकिन जॉर्ज ने वह वर्दी देखी जो वाशिंगटन ने 23 दिसम्बर 1783 को पहनी था, जिस दिन उन्होंने सेना से त्यागपत्र दिया था. वर्दी काले और भूरे रंग की थी. उस पर सफेद झालरें और पीतल के बटन लगे थे. जॉर्ज ने जहाँ भी देखा वहाँ पीतल के बटन थे-जैकेट के सामने की ओर, ऊपर से नीचे तक, पीछे गर्दन के निकट, आस्तीन पर, जेबों पर, कोट के निचले भाग पर और पतलून पर घुटनों के पास. जॉर्ज वर्दी के चारों ओर घूमा और उसने सभी बटनों को गिना. सब मिला कर 64 बटन लगे थे.

जॉर्ज लौट कर मूर्ति के पास आया. “मुझे पूरा विश्वास है कि आपके और मेरे अतिरिक्त संसार में किसी ने भी उस वर्दी पर लगे बटनों को गिना होगा.”



माउंट वर्नन पहुँच कर जॉर्ज और उसके माता-पिता सीधे रसोईघर में आए. वह उसी रास्ते पर चल कर आये जिस पर कभी जॉर्ज वाशिंगटन चला करते थे. जब भी जॉर्ज अपना पाँव धरती पर रखता वह कल्पना करता कि वाशिंगटन के 13 नंबर के जूते का निशान भी वहीं था.

रसोईघर मुख्य इमारत से दूर घर के एक ओर था. यह एक बड़ा कमरा था जिसमें एक तरफ ईंटों की बनी अंगीठी थी. दीवारों पर पीतल के बने बर्तन और लोहे के बर्तन और तवे लटक रहे थे. जॉर्ज की सांस थम गई. उस अंगीठी पर, उसने अपने आप से कहा, वाशिंगटन के लिए नाश्ता तैयार किया जाता था. दीवार पर लटके इन्हीं बर्तनों में खाना पकता होगा. अचानक जॉर्ज लगा कि वह जॉर्ज वाशिंगटन के साथ उसका बहुत निकट का संबंध है. इस विचार ने उसे रोमांचित कर दिया.

दरवाज़े पर खड़े प्रहरी से उसने पूछा, “क्या आप मुझे बता सकते हैं कि जॉर्ज वाशिंगटन नाश्ते में क्या खाते थे.”

प्रहरी ने रटी-रटाई जानकारी उसे दी, “नाश्ता सात बजे किया जाता था. मेहमानों को ठंडे और गर्म मांस के साथ चाय और कॉफी परोसी जाती थी.”



“वाशिंगटन भी क्या वही नाश्ता करते थे?”

प्रहरी थोड़ा असमंजस में पड़ गया. “यह मैं नहीं जानता.” उसने कहा. “मुझे यहाँ आए हुए सिर्फ आठ माह ही हुए हैं.”

जॉर्ज इस बात से संतुष्ट न हुआ. फिर भी उसे लगा कि उसके प्रश्न का उत्तर उसी रसोईघर में ही होना चाहिए. अगर वह आँखें बंद कर प्रयास करे तो उसे उत्तर मिल जाए.

जॉर्ज ने अपनी आँखें बंद कर लीं. वह चुपचाप सुनने लगा. कुछ समय बाद उसे लगा कि कमरे के दूसरी ओर से कुछ आवाज़ आ रही थी. उसे लगा कि शायद अंगीठी में आग फिर से जलने लगी थी. बाहर उसे कुत्ते के भोंकने की आवाज़ सुनाई दी. पॉम्पी, उसने सोचा, या शायद डरंकर्ड भोंक रहा था.





जॉर्ज ने अपनी आँखें और कस कर बंद कर लीं और ध्यान से सुनने लगा. फिर उसे लगा कि दरवाज़े के पास एक परछाई थी. एक बहुत धीमी फुसफुसाहट उसे सुनाई दी. जॉर्ज ने उस फुसफुसाहट को ध्यान से सुनने का प्रयास किया.

“मैंने मेहमानों को नाश्ता परोस दिया है,” उस आवाज़ ने कहा, “अब जनरल के लिए नाश्ता तैयार करो.”

जॉर्ज इतना उत्तेजित हो गया कि उसने अपनी आँखें खोल लीं. लेकिन अंगीठी में आग नहीं जल रही थी. वहाँ कोई नहीं था. नाश्ते का भी कोई चिन्ह नहीं था. उसे लगा कि उसने आँखें थोड़ा जल्दी खोल ली थीं. लेकिन जब उसने दुबारा आँखें बंद की तो कोई लाभ न हुआ. सब अदृश्य हो गया था. और प्रहरी भी अनोखे ढंग से उसे देख रहा था.

रविवार दुपहर बाद जॉर्ज और उसके माता-पिता घर लौट आए. घर पर जॉर्ज की दादी और मिस विलिंग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे.

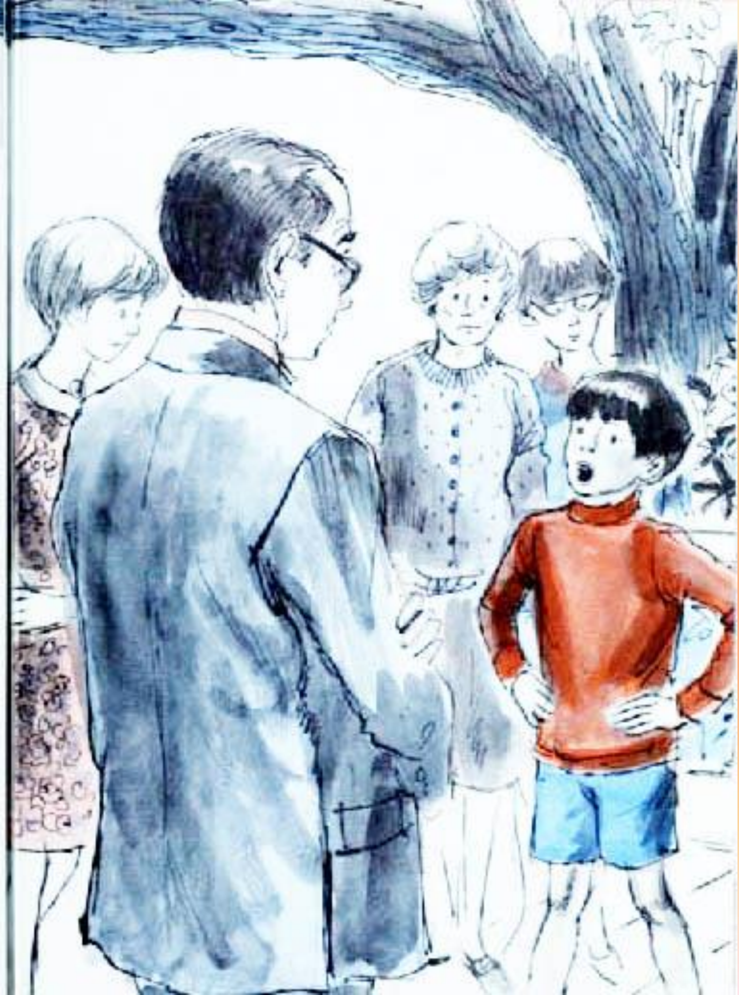
“कोई सफलता नहीं मिली,” जॉर्ज ने कहा. उसे खेद था कि सब निराश हो गए थे. पर उसे लगा कि उन्हें अब यह सोचना चाहिए कि आगे क्या करना है.

इसके बजाय उसके पिता ने उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, “बेटा, यह अच्छा प्रयास था. लेकिन हर बार सफल होना संभव नहीं होता.”

“कई बार पीछे हट जाना ही एक बेहतर विकल्प होता है,” उसकी माँ ने कहा.

जॉर्ज की दादी ने कहा कि उनके विचार में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि जॉर्ज वाशिंगटन नाश्ते में क्या खाते थे.

जॉर्ज ने आश्चर्य से अपने परिवार को देखा. “हार मान लूँ!” उसने चिल्लाकर कहा, “आप चाहते हैं कि मैं हार मान लूँ! जॉर्ज वाशिंगटन के सैनिक भूख से मर रहे थे पर उन्होंने हार नहीं मानी. वह ठंड से जम रहे थे लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी. आपको क्या लगता है कि मैं कौन हूँ?”



जॉर्ज इतने गुस्से में था कि उसने दरवाज़े को ज़ोर से बंद किया और ऊपर अपने कमरे में चला आया. अपने कमरे में भी उसको अपने परिवार वालों की बातें सुनी दे रही थीं. वह मिस विलिंग के साथ उसके बारे में बात कर रहे थे. वह दनदनाता हुआ ऊपर अटारी में आ गया. वहाँ सीढ़ी के सबसे ऊपरी पायदान पर बैठ गया. यह जगह शांत थी. और बिलकुल साफ. वह देख रहा था कि दादी ने सफाई की थी.

उसके बैठने की जगह के पास एक डिब्बा पुरानी चीज़ों से भरा पड़ा था. यह चीज़ें दादी ने फेंकने के लिए इकट्ठी की थीं. डिब्बे में सबसे ऊपर एक पुराना खिलौना था, एक कुत्ता. उसने उसका नाम रखा था जिंजर. उसका एक कान कट गया था और पूँछ एक धागे से लटक रही थी. तब भी वह अच्छा खिलौना था. जॉर्ज ने उसे उठा कर अलग रख दिया.

उसने डिब्बे के अंदर देखा. डिब्बे में बैटमैन के कुछ पुराने कॉमिक्स भी थे. उसने सोचा, अच्छा हुआ जो मैं ऊपर आ गया. पुराने कॉमिक्स कभी फेंकने नहीं चाहिए.





कॉमिक्स के नीचे उसे एक किताब मिली. यह एक पुरानी किताब थी, जर्जर अवस्था में. शायद उसके दादा की थी. उसे लगा कि इसे फेंकना गलत होगा. किताब का नाम था, 'अमेरिकन ऑरकल' और इसके लेखक थे, सैमुयल स्टर्न्स, वह नहीं जानता था कि वह कौन थे.

जॉर्ज ने किताब के कुछ पन्ने पलटे और उसके मुँह से एक सीटी निकली. ऐसा लगता था कि जैसे सैमुयल स्टर्न्स सब कुछ जानते थे. किताब में उन्होंने लिखा था कि 'अपनी पत्नी का चुनाव कैसे करें'. 'खटमलों को कैसे मारें'. 'गंजे होने से कैसे बचें'. उत्तरी अमरीका के 140 अधिक पक्षियों के नामों की सूची थी. वर्ष 17 के बाद जितने भी प्रसिद्ध भूकम्प आए थे उनकी भी सूची थी. फिर किताब में एक चैप्टर था जिसका शीर्षक था, 'जॉर्ज वाशिंगटन का चरित्र'

जॉर्ज ने किताब पलट कर किताब के छपने की तारीख पढ़ी

"1791" उसने कहा. "लेखक उसी काल में रहता था जिस काल में जॉर्ज वाशिंगटन रहते थे."

जॉर्ज ने उस चैप्टर को खोला जो वाशिंगटन के बारे में था.

"मिस्टर स्टर्न्स, अगर आप इतना कुछ जानते हैं," जॉर्ज ने कहा, "तो कृपया बतायें कि वाशिंगटन नाश्ते में क्या खाते थे."

"वाशिंगटन," मिस्टर स्टर्न्स ने लिखा था, "ने एक वर्ष में 7000 बुशल्स गेहूँ के और 10000 बुशल्स कॉर्न के उपजाये थे."

"ओके, ओके," जॉर्ज ने कहा, "यह मेरा प्रश्न नहीं था."

"वाशिंगटन," मिस्टर स्टर्न्स ने आगे लिखा था, "बहुत ही नियमशील, संयमित और परिश्रमी हैं, सर्दी हो या गर्मी वह हमेशा भोर के समय उठ जाते हैं."

"फिर उसके बाद क्या?" जॉर्ज ने पूछा.

"वह सात बजे नाश्ता करते हैं," मिस्टर स्टर्न्स ने लिखा था, "नाश्ते में....."

अचानक जॉर्ज खुशी से चिल्लाया. उसने किताब को पीठ पीछे छिपा लिया और नीचे भागा.

“दादी!” उसने चिल्ला कर कहा, “क्या आपने कहा था कि आप जॉर्ज वाशिंगटन का नाश्ता बनायेंगी?”

“लड़के अगर तुम ने पता लगा लिया कि वह नाश्ता क्या था तो मैं उसी समय वह नाश्ता बनाऊँगी, चाहे कोई भी समय हो.”

“क्या इसी पल भी?”

“यही तो मैं कह रही हूँ.”

जॉर्ज मुस्कराया. “दादी,” उसने कहा, “एप्रन पहन लो.”

उसने छिपाई हुई किताब आगे की.

“वाशिंगटन,” वह पढ़ने लगा, “सात बजे नाश्ता करते थे. वह तीन छोटे इंडियन हो-केक (Indian hoecakes) खाते थे और तीन कप चाय पीते थे.”

जॉर्ज ने किताब उनको दे दी. किताब देख कर सब बहुत प्रसन्न थे, सिवाय दादी के.

“जॉर्ज,” दादी बोलीं, “मुझे बिलकुल पता नहीं कि इंडियन हो-केक क्या होता है.”



जॉर्ज डिक्शनरी उठा लाया. उसने अक्षर H के नीचे हो-केक का अर्थ ढूँढा. अर्थ था, एक ऐसा केक जो मक्की का आटे, नमक और पानी से बनाया जाता और जिसे पुराने समय में कुदाल पर पकाया जाता था.

जॉर्ज का दादी ने अपना एप्रन पहन लिया. "मेरे पास मक्की का आटा, नमक और पानी है," उन्होंने कहा, "मैं एक इंडियन हो-केक बना सकती हूँ."

जॉर्ज के पिता ने अंगीठी में आग जला दी.

जॉर्ज की माँ ने केतली में चाय के लिए पानी उबलने के लिए रख दिया.

जॉर्ज ने कहा कि वह बेसमैंट से एक कुदाल लेने जा रहा था लेकिन उसकी दादी ने उसे रुकने के लिए कहा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं यह केक एक कुदाल पर बनाऊँ, सच में?"

"डिक्शनरी में तो ऐसा ही लिखा है."

"डिक्शनरी में लिखा है कि पुराने दिनों में इन्हें कुदाल पर पकाया जाता था. मेरे विचार में वह जॉर्ज वाशिंगटन से पहले समय की बात होगी."

जॉर्ज कुछ तय न कर पाया. वह चाहता था कि नाश्ता वैसे ही बने जैसा वाशिंगटन के लिए बनता था."

"क्या तुमने जॉर्ज वाशिंगटन के रसोईघर में कोई कुदाल देखी थी?"

जॉर्ज ने स्वीकार किया कि वहाँ कुदाल नहीं थी.

"तो क्या," दादी ने पूछा, "लोहे के काले रंग के तवे थे वहाँ?"

जॉर्ज ने कहा कि तवे तो थे.



"हम भी तवे का उपयोग करेंगे," दादी ने समझाया. उन्होंने एक बाउल में मक्की का आटा और नमक और पानी मिलाया और आटे को गूँद कर हाथों से छोटे-छोटे केक का आकार दिया.

आग के चारों ओर बैठ कर सब नाश्ते की प्रतीक्षा करने लगे. शीघ्र ही केतली में चाय उबलने लगी और केक सुनहरी-भूरे रंग के होने लगे.

फिर जॉर्ज की दादी ने जॉर्ज वाशिंगटन का नाश्ता परोसा.



जॉर्ज ने केक का एक टुकड़ा काट कर खाया. केक स्वादिष्ट था, उसने सोचा. उसने अपना माता और पिता और दादी और मिस विलिंग की ओर देखा. सब उस रविवार की दुपहर केक खा रहे थे. जॉर्ज को लगा कि जीवन में उसने अपने को जॉर्ज वाशिंगटन के इतना निकट कभी महसूस न किया था जितना निकट वह उस रविवार का कर रहा था. ऐसा लग रहा था कि जैसे जॉर्ज वाशिंगटन उस पल वहीं अंगीठी के पास खड़े थे. और डरंकर्ड उनके पाँव के पास बैठा था.

सिर्फ एक बात की परेशानी थी.



जब जॉर्ज ने अपने तीन हो-केक खा लिए और तीन कप चाय पी ली, उसे लगा कि उसकी भूख मिटी न थी. और अगर वह अब भी भूखा था, उसने सोचा, तो क्या वाशिंगटन की भूख मिट जाती होगी? जो व्यक्ति छह फुट ऊँचा था और देश का जनक था, उसके लिए तो यह नाश्ता बिलकुल पर्याप्त न था.

"मुझे लगता है कि वाशिंगटन को लंच के लिए अधिक प्रतीक्षा न करनी पड़ती होगी," उसने कहा. "आशा है कि लंच में उन्हें बहुत कुछ खाने को मिलता होगा. मैं सोच रहा हूँ कि लंच में ......"

लेकिन जॉर्ज अपनी बात पूरी न कर पाया. उसकी दादी खड़ी थीं.

"जॉर्ज वाशिंगटन ऐल्न," वह चिल्ला कर बोलीं, "बस अब और नहीं." और उन्होंने हाथ में पकड़ी कलछी से उसका ओर संकेत किया.

"आज नहीं," मिस विलिंग ने कहा, "आज लाइब्रेरी बंद है."

"ओके," जॉर्ज मुस्कराते हुए बोला, "चलो आज नहीं."

